क्षेत्रीय/सहायक सेवायोजन अधिकारियों के स्थानान्तरण हेतु विकल्प/अनुरोध/प्रत्यावेदन पत्रों का विवरण

क्र0सं0		1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13
अधिकारी का नाम		श्री अजय सिंह	श्री शंकर बोरा	श्रीमती अनुभा जैन	श्रीमती ममता चौहान नेगी	श्री नारायण सिंह दरम्वाल	श्री विक्रम दास	श्रीमती विनीता बडौनी	श्री उत्तम कुमार	श्रीमती भगवती धर्मशक्तू	श्री कपिल पाण्डे	सुश्री लक्ष्मी यादव	श्री सुशील चमोली	श्री अब्बल सिंह बिष्ट
वर्तमान तैनाती कार्यालय का नाम		क्षे0से0का0 देहरादून	शिमाके खटीमा	जि0से0का0 उद्यमसिंह नगर	प्रर्वतन ईकाई देहरादून	न0से0का0 रामनगर	जि0से0का0टिहरी	क्षे0से0का0 देहरादून	जि0से0का0 हरिद्वार	शिमाके पिथौरागढ़	जि0से0का0रूद्रप्रयाग	वि0से0का0 जनजाति कालसी	क्षे0से0का लैन्सडोन	सीसीजीसी गोपश्वर
पदनाम		क्षे0से0अधिकारी	स0से0अधिकारी	जि0सेवा0 अधिकारी	सहा0 प्रवर्तन अधिकारी	स0से0अधिकारी	जि0सेवा0 अधिकारी	स0से0अधिकारी	जि0से0अधि0	स0से0अधिकारी	जि0सेवा0 अधिकारी	वि0से0अधिकारी	स0से0अधिकारी	स0से0अधिकारी
स्थानान्तरण चाहने हेतु विकल्प	1	सेवायोजन निदेशालय हल्द्वानी	जिसेका पिथौरागढ़	विसेका कालसी	विसेका कालसी	जिसेका उधमसिंहनगर	शिमाके कालसी	क्षेसेका देहरादून		शिमाके पिथौरागढ़	प्रर्वतन देहरादून	उधमसिंह नगर	विसेका कालसी	
	2	क्षेसेका लैंसडौन	जिसेका बागेश्वर	शिमाके केन्द्र कालसी	शिमाके कालसी	नसेका काशीपुर	विसेका कालसी	यूईबी रूड़की		शिमाके हल्द्वानी	विसेका कालसी	हरिद्वार	शिमाके कालसी,	
	3	क्षेसेका देहरादून	शिमाके पिथौरागढ़	नसेका पौडी	क्षेसेका लैंसडौन	शिमाके दिनेशपुर	प्रवर्तन देहरादून			नसेका हल्द्वानी	शिमाके कालसी	देहरादून	जिसेका रूद्रप्रयाग	
	4	क्षेसेका अल्मोडा	शिमाके चम्पावत	जिसेका बागेश्वर	नसेका पौडी,	शिमाके खटीमा	क्षेसेका देहरादून			शिमाके दिनेशपुर	क्षेसेका देहरादून	नैनीताल	शिमाके रूद्रप्रयाग	
	5		शिमाके बागेश्वर	शिमाके बागेश्वर	शिमाके उत्तरकाशी,	नसेका रानीखेत	जिसेका हरिद्वार			नसेका रामनगर	क्षेसेका लैंसडौन	टिहरी	जिसेका चमोली	
	6		शिमाके धारचूला	जिसेका चमोली	जिसेका रूद्रप्रयाग,	शिमाके अल्मोड़ा,	जिसेका उत्तरकाशी			क्षेसेका अल्मोड़ा	शिमाके कोटद्वार		शिमाके चमोली	
	7		क्षेसेका लैंसडौन	शिमाके चमोली	शिमाके रूद्रप्रयाग,	क्षेसेका अल्मोड़ा,	जिसेका नैनीताल			शिमाके अल्मोडा	यूईबी रूडकी		शिमाके उत्तरकाशी	
	8		विसेका कालसी	क्षेसेका लैंसडौन	जिसेका चमोली	यू0ई0बी0 हरिद्वार,	शिमाके देहरादून			शिमाके चम्पावत			शिमाके चम्पावत,	
	9		शिमाके कालसी	क्षेसेका लैंसडौन	शिमाके चमोली	यू0ई0बी0 रूड़की,	क्षेसेका देहरादून			शिमाके बागेश्वर			जिसेका बागेश्वर,	
	10		नसेका पौड़ी	शिमाके पिथौरागढ़		शिमाके हरिद्वार,	यूईबी श्रीनगर			जिसेका बागेश्वर			शिमाके बागेश्वर,	
अभियुक्ति					प्रत्यावेदन/ अनुरोध संलग्न है		प्रत्यावेदन/ अनुरोध संलग्न है	प्रत्यावेदन/ अनुरोध संलग्न है	प्रत्यावेदन/ अनुरोध संलग्न है	प्रत्यावेदन/ अनुरोध संलग्न है				पदोन्नत सहायक सेवायोजन अधिकारी, प्रत्यावेदन/ अनुरोध संलग्न है

(जे0 एस0 नागन्याल)
निदेशक

117
23/10

मेल द्वारा:— अग्रिम प्रति

सेवा में,

निदेशक,
सेवायोजन उत्तराखंड हल्द्वानी,
नैनीताल

विषयः—सुगम से दुर्गम क्षेत्र में स्थानान्तरण के सम्बन्ध में प्रत्यावेदन।
सन्दर्भः—पत्रांक103 / डी.टी.ई.यू. / ई—1 / स्था0अधि / विकल्प पत्र / 2018 दिनांक 20.04.2018
महोदय,

विनम्र निवेदन करना है कि निदेशालय के पत्र क्रमांक 1203—14 / डीडीई / ई—1 / स्था0 / 2017 दिनांक 18 जुलाई 2017 एवं क्षेत्रीय सेवायोजन अधिकारी देहरादून के पत्रांक 1564—69 / 0901 / ई—1 / स्था0 / 17 दिनांक 24.07.2017 के अनुपालन में मेरा स्थानान्तरण क्षेत्रीय सेवायोजन कार्यालय देहरादून से जिला सेवायोजन कार्यालय गोपेश्वर में शिक्षण एवं मार्ग दर्शन केन्द्र में सचिवीय पद्धति के पद पर हुआ था। आदेशो के अनुपालन में मैने 26.07.2017 को कार्यभार ग्रहण किया। उपरोक्त विषय के सम्बन्ध में यह अनुरोध करना है कि मेरा स्थानान्तरण जुलाई 2010 में क्षेत्रीय सेवायोजन कार्यालय देहरादून में हुआ था। और मेरी सेवाकाल में 25 वर्ष की सेवाएं दुर्गम क्षेत्र की थी, जब मेरा स्थानान्तरण जुलाई 2017 में देहरादून से जिला सेवायोजन कार्यालय गोपेश्वर में किया गया था तो मेरी आयु 57 वर्ष से अधिक की थी व मुझे विश्वस्त्र सूत्रों से ज्ञात हुआ कि शासनादेश में यह प्राविधान था कि जिन अधिकारी / कर्मचारी की आयु 55 वर्ष से अधिक की है तो बिना अधिकारी / कर्मचारी के सहमति के स्थानान्तरण नहीं किया जाना चाहिए था।

यह भी उल्लेखनीय है कि अनुदेशक सचिवीय पद्धति के पद पर कार्यरत श्री कुवंर सिंह मेवाड़ जो पूरे सेवाकाल में जनपद देहरॉदून में ही कार्यरत है। और सुगम से दुर्गम क्षेत्र की सूची में किन नियमों के तहत सम्बन्धित कर्मचारी को स्थानान्तरण हेतु सूची में सम्मलित नहीं किया गया।

इस सम्बन्ध में मैं तत्कालीन निदेशक डॉ0 अशोक कुमार महोदय से मिला और अपनी समस्याओं की जानकारी उनको मौखिक रूप से दी, कि मेरी पत्नी व मेरा स्वास्थ्य खराब रहता है।स्वास्थ्य परीक्षण के लिए पत्नी को बार—बार देहरादून आना पड़ता है। इस हेतु मेरा स्थानान्तरण स्थगित किया जाय। किन्तु उनके द्वारा मौखिक रूप से यह बताया कि जनपद चमोली में जिला सेवायोजन अधिकारी का पद काफी समय से रिक्त है, साथ ही अपने कार्य के साथ—साथ आपको जिला सेवायोजन अधिकारी का कार्य भी देखना है, क्योंकि 2014 में जिला / सहायक सेवायोजन अधिकारी के पदों पर पदोन्नति हेतु विभाग एवं शासन द्वारा लोक सेवा आयोग को पदोन्नति हेतु अधियाचन भेजा गया था, जिसमें मैं भी एक पात्र कर्मचारी था, किन्तु जब 28 / 29 जून 2017 को आयोग में डीपीसी बैठी जिसमें मुझसे कनिष्ठ कर्मचारीयों के नामों पर

CAO/श्री ३६/

क्रमशः

3
11.7.18

सहमति दी गई, किन्तु मुझे .84 प्रतिशत होने पर वंचित कर दिया गया। मेरे द्वारा 11 जुलाई 2017 को निदेशक महोदय, सचिव महोदय एवं लोक सेवा आयोग उत्तराखंड के माननीय अध्यक्ष लोकसेवा अयोग एवं सचिव लोकसेवा आयोग को बार–बार प्रत्यावेदन दिया गया। तत्पश्चात शासन द्वारा भी उक्त प्रकरण पर कार्मिक विभाग की सलाह लेने के बाद शासनादेश दिनांक 14.03.2005 के प्रस्तर–2/(2) में क्षैतिज आरक्षण की गणना 0.5 प्रतिशत या उससे अधिक होने पर पूर्णांक के रूप में किये जाने का प्राविधान होने के दृष्टिगत शासन ने पत्र सख्या 1182/VIII/17–18 (श्रम)/2017 दिनांक 27 सितम्बर 2017 को पुनः पदोन्नति हेतु विचार करने के लिए सचिव लोक सेवा आयोग उत्तराखड को पत्र प्रेषित किया गया, तदोपरान्त आयोग द्वारा बार–बार उक्त पद पर चयन हेतु तिथि निर्धारित की गई, लेकिन शासन द्वारा बार–बार प्रतिनिधित्व न होने के कारण आगामी तिथि निर्धारित करने के लिए पत्र भेजा जाता रहा, तत्पश्चात 28 फरवरी 2018 को उक्त पद की डीपीसी आयोग में सम्पन्न हुई, मुझे जानकारी मिली कि 5 अप्रैल 2018 को सचिव लोकसेवा आयोग की सहमति का पत्र सचिव सेवायोजन को प्राप्त हो गया है। अभी तक मेरी पदोन्नति का प्रकरण शासन एवं निदेशालय स्तर पर लम्बित है। मेरी सेवाकाल के मात्र 2 वर्ष अवशेष है मेरी पत्नी राज्य सरकार के राजकीय प्राथमिक विद्यालय गैर जनपद चमोली में प्रधानाध्यापिका के पद पर कार्यरत है एवं उनका स्वास्थ्य बार–बार अस्वस्थ हो जाता है यहां पर उपचार के अच्छे साधन न होने के कारण उपचार के लिए बार–बार देहरादून या अन्य चिकित्सालयों पर ले जाना पड़ता है। ऐसी परिस्थति में आपसे अनुरोध है कि मेरी पदोन्नति होने पर मुझे जिला सेवायोजन कार्यालय चमोली में यथावत रखा जाय, और यदि स्थानान्तरण/पदोन्नति पर स्थानान्तरण किया जाता है तो मेरी सेवाकाल को एवं पारवारिक परिस्थतियों को मध्य नजर रखते हुए एक मात्र विकल्प क्षेत्रीय सेवायोजन कार्यालय देहरादून का देना चाहता हूं।

दिनांक, 26-4-2018

सादर सहित।

भवदीय

(अब्बल सिंह बिष्ट)
अनुदेशक सचिवीय पद्धति,
जिला सेवायोजन कार्यालय,
गोपेश्वर, चमोली।